OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 3

मादरे जहान मम्मा...

एक गीत के बोल हैं : उसको नहीं देखा हमने कभी, पर उसकी ज़रूरत क्या होगी, ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी। बात भक्ति और भावना जैसी तो है, पर वह परम अस्तित्व परमात्मा, आप समान या ईश्वर के समान बनने का अवसर भी तो उन्हीं गुणों और शक्तियों को भरकर देता है, जो स्वयं उसके भी हैं। इन्हीं से तो पहचान होती है कि आत्मा कितनी निर्विकारी हुई है और उस रूपांतरण की स्थिति कैसी है। यह सभी कुछ उसके व्यवहार से प्रकट होता है। पारखी इसी परिवर्तन को समझकर अस्तित्व को पहचानता है और गुण तथा शक्तियों में विभाजित परमात्मा भी इसी माध्यम से प्रकट होता हुआ अनुभव में आता है। जिन्होंने ब्रह्मा बाबा को, मम्मा को देखा और अनुभव किया है, वे ही सम्भवत: इसकी पुष्टि कर सकते हैं। जिन्होंने नहीं देखा वे उन घटनाओं, प्रसंगों और विचार-रूपकों से इन सभी दृश्यों को इमर्ज कर उस अनुभूति से प्रेरित होते होंगे।

- ब्र.कु. गंगाधर

यज्ञ माता सरस्वती जिन्हें सभी आदर तथा स्नेह से 'मम्मा' कहते और मानते हैं, को याद करते हुए यही सब तो याद आता है। तभी तो गीत रचने वाला कह पाया -ऐ माँ तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी। यह देह का स्मरण है या परमात्मा को याद करते हुए सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा का स्मरण है -सोचें। सोचें इसलिए कि 24 जून 1965 के बाद जब मम्मा की हमें याद आती है या हम उनका स्मरण करते हैं तो उसका आशय और अर्थ क्या है। आशय, उन्हें एक 'रोल मॉडल' प्रेरक व्यक्तित्व की तरह याद करना ताकि हम उस स्थिति तथा ऊँचाई तक पहुंच सकें। अर्थ यह कि प्रवृत्ति की समस्याओं और संघर्षों में उसी तरह अचल और अडोल रह सकें, जैसे वे भी यज्ञ की संभाल करते हुए बनी रहीं। अर्थ यह भी कि उनकी निष्ठा, निश्चय और अभय को हम भी अपने में जांचें और पहचानें।

देहांतरित दादी प्रकाशमणि ने उन्हें याद करते हुए बताया था -'वे स्मृतिधर थीं'। प्यारे बाबा के एक महावाक्य के अनेक राज खोल देने वाली राजयुक्त। चातक पक्षी के समान ज्ञान-सागर की एक-एक बूंद की अनुरागी। वे संसार के हर दृश्य से उपराम थीं। वे चलती फिरती दिव्य परी थीं जिनका तन प्रकाश की रश्मियां प्रवाहित करता था। जादू की छड़ी की तरह, उनकी करुणा भरी दृष्टि जिस पर पड़ जाती, वह जन्म-जन्म की तपन, थकान और अज्ञान से मुक्ति पा जाता था। ऐसे अनेक गुणों तथा शक्तियों का व उनके साथ बिताये पलों की याद दिलाने वाले प्रसंगों का भंडार ब्रह्मा-वत्सों की स्मृति में है। पर उन कहानियों को हम समझ भी पायेंगे या सिर्फ उन्हें जानकारियों की तरह दोहराते ही रहेंगे। ब्र.कु.निर्वैर जी के शब्दों में यही बात इस तरह है -'परमात्मा को पहचानने के लिए दिव्य बुद्धि व दिव्य दृष्टि की आवश्यकता है। इसी प्रकार, उनकी (प्रजापिता ब्रह्मा) मुख वंशावली बेटी सरस्वती को पहचानने के लिए भी दिव्य बुद्धि की निर्मलता की आवश्यकता है। उनका स्मरण कराती घटनाएं, प्रसंग तथा विचार प्रेरक तभी बन सकेंगे, जब उन्हें हम आध्यात्मिक अर्थों में समझ भी सकें।

उन्हें 'यज्ञ माता' स्वयं बाबा ने कहा और 'मम्मा' उन्हें यज्ञ के वत्सों ने स्वीकार किया। दादी निर्मलशांता ने उन्हें यह सम्बोधन अपनी पालना के दौरान दिया था, पर उनके पालना के यह गुण प्रेम, स्नेह, समझाने का तरीका, विकास की ललक यानी वे सभी व्यवहार तथा शिक्षाएं जो मातृत्व का अहसास कराती थीं, मम्मा के व्यवहार में स्पष्ट होती थी। उन्होंने इस यज्ञ के कठिन दिनों में जिस धैर्य और सूझबूझ से श्रीमत से बिना हटे निरंतर विकास किया, वह उनके असाधारण व्यक्तित्व का ही करिश्मा था। उनका हाँ-जी का पाठ और ज्ञान की समझ ऐसी स्पष्ट थी कि सब उन्हें अपने आगे ही पाते थे। ब्र.कु.जगदीश भाई ने उनके इसी गुण के सम्बन्ध में कहा है : वह दिव्य गुणों की खान थीं। वह मादर-ए-जहान (वर्ल्ड मदर) थीं। वह न होती तो कुछ भी न होता। वही तो प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा परमात्मा शिव का ईश्वरीय ज्ञान सुनकर सभी यज्ञ वत्सों को समझाती थीं। वह तो उनके सामने ज्ञान और योग का नमूना थीं। सभी यज्ञ वत्सों को सम्भालने के लिए वही तो निमित्त थीं। दादी जानकी ने कराची की याद करते हुए बताया कि मम्मा ऑफिस में बैठी थीं तो मैंने जाकर पूछा-मम्मा हम क्या पुरुषार्थ करें? मम्मा ने कहा :सदैव समझो यह मेरी अंतिम घड़ी है और मुझे बाबा की याद में रहना है। ब्र.कु. करुणा ने कहा कि उनकी दृष्टि में पावनता थी और उनकी पालना व क्षमा का गुण गजब का था। जब हम मम्मा को याद करें तब यह भी याद रखें कि मम्मा, बाबा के वचन और व्यवहार को सामने रखती थीं। एक बार किसी ने मम्मा से पूछा, मम्मा पहले बाबा कहते थे कि जहां जीत, वहां जन्म। आज कल बाबा उसके बारे में कुछ बोलते नहीं। आपका क्या विचार है? मम्मा बोली -मेरा विचार कहां से आ गया? जो बाबा ने कहा है वही हम सबका विचार है। ऐसी निराभिमानी, त्यागी वैरागी और तपस्वी मम्मा की याद उस पुरुषार्थ की याद है जो बच्चों को परमात्मा समान बनाती है। हे जगदम्बा सरस्वती आपके स्मृति दिवस पर आपको शत् शत् नमन।

नष्टोमोहा रहने वाले ही सदा खुश

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

निश्चयबुद्धि से मायाजीत, नष्टोमोहा बनने वाले किसी के शरीर छोड़ने पर दु:खी नहीं होते। बाबा ने जो खुशी दी है उसकी बहुत वैल्यु है। ज्ञान मार्ग में एक-एक बात इतनी अच्छी, स्पष्ट मिली है इसलिए सदा राज़ी हैं, नाराज़ नहीं होते हैं। कोई ने कुछ कहा, किया अच्छा है। जो हर राज़ को समझकर खुश हो रहते हैं वह हेल्दी वेल्दी रहते हैं। माइन्ड से हेल्दी हैं तो शरीर भी हेल्दी है। जिसका माइन्ड हेल्दी नहीं है तो शरीर भी बिचारा...और शरीर कैसा भी हो पर माइन्ड अच्छा हो तो शरीर को अच्छा कर देता है। तो हेल्दी कैसे हुए? वेल्दी भी बहुत हैं ना, ज्ञान का खज़ाना है, इसलिए हैप्पी हैं। कभी दुनिया में कुछ भी हो जाये, विनाश आ जाये तो भी हम खुश होंगे।

जब से बाबा को साक्षात्कार हुआ विनाश का और विष्णु का, इस साक्षात्कार को 75 साल हो गया तो कईयों को संशय आता है, पता नहीं विनाश कब आयेगा! बाबा तो कहता है विनाश आया कि आया। अगर इतना समय न होता तो इतने बाबा के बच्चे कैसे पैदा होते, तो भगवान जानता है। नई दुनिया स्थापन करना और उसमें आने वाले बच्चों को लायक बनाके पालना देना, यह बाबा का ही पार्ट है। हम सब बाबा के बच्चे हैं, आत्मायें हैं तो भाई-भाई हैं, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी हैं तो बहन भाई हैं। जब भी याद में बैठते हैं तो अंदर से यही दिखाई पड़ता है, सब आत्मायें हैं...पर ऐसी आत्मिक स्थिति हो जो मेरे को देखके वो भी अपने को आत्मा समझना शुरु कर दे। मेरा शरीर दिखाई न पड़े, इसके लिए अपना भी शरीर भूल जाये। अभिमान, देह-अभिमान को जिसने खत्म किया, वही राजाओं का राजा बनेगा। बाबा इसीलिए राजयोग द्वारा रॉयल्टी सिखा रहा है। कभी दिल में, मन में भूल से भी कोई संकल्प न आये यह मेरा है, मैं फलाना हूँ, मेरे पास यह मकान है, दुकान है...।

प्रैक्टिकली बाबा ने जो बोला है, सो किया कराया है तब प्रवृत्ति मार्ग वाले इतने बाबा के बच्चे निकले हैं। पहले समझते थे ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी बनना माना घर छोड़ना, बाबा के पास आ करके बैठ जाना। आज बाबा ने कहा, कहाँ भी रहे वो, अगर 7 दिन का कोर्स अच्छा करे, मुरली रोज़ पढ़े और अमृतवेले अच्छा करे फिर बाबा की याद में खाना बनाके खाये, खिलाये। भोजन शुद्ध हो, एक-एक कणे-दाने का भी कदर हो, भावना से स्वीकार करे..तो बहुत आगे जा सकता है। बाबा जब हमें छोटे बच्चों के समान प्यार से मेरे मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, कल्प पहले वाले बच्चे कहता है तो हमको खींच होती है, बुद्धि देह की आकर्षणों, सम्बन्धों से न्यारी हो जाती है क्योंकि भगवान कहे मेरे मीठे बच्चे...यह कितनी बड़ी बात है! फिर मुरलियाँ सुनते हैं तो बाबा के लिए प्रेम बहुत है क्योंकि मुरली में जादू है, परिवर्तन होता है ना। माया ने बुद्धि का ताला बन्द कर दिया, कर्म अकर्म, विकर्म की गति भुला दी जिससे पता ही नहीं पड़ा यह क्या कर्म कर रहे हैं? विकारों वश थे लेकिन बाबा ने मुरली द्वारा अच्छी तरह से बुद्धि का ताला खोल दिया, तो बाबा से प्रेम बहुत हो गया।

दिल में दिलाराम को बिठायें तो दिल खुश रहेगा

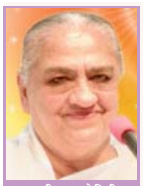

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा का साथ बहुत प्यारा है। एक बाबा शब्द में भी बहुत प्यार है। बाबा ने हम सबको इतना प्यार दिया है, इतनी मेहनत की है एक एक बच्चे के ऊपर जो बच्चा कभी भूल नहीं सकता है। बाबा ने जो प्यार दिया है हमको इतना अच्छा बनाया है वो कभी भूल सकता है? नहीं भूल सकता है, यही प्यार हमको दो युग बहुत आनंद और प्रेम दिलायेगा। लेकिन उसके पहले अभी जो बाबा चाहता है वो करना है, बस। जो बाबा ने मुरली में कहा वो करने से बाबा जो चाहता है वो चाहना पूरी होती है और हम भी बहुत खुश होते हैं। जब रात्रि को देखते हैं, जो बाबा ने कहा वही हमने सारा दिन किया है तो अपने ऊपर भी बहुत खुशी होती है। अगर नहीं करते हैं तो शक्ल थोड़ी बदलती है। लेकिन मधुबन में न चाहते हुए भी सबका योग लग जाता है क्योंकि वायब्रेशन ऐसा है, जो भी यहाँ आते हैं उन सभी के मन में मीठा बाबा, प्यारा बाबा, बाबा ही बाबा होता है। और बाबा जो मुरली चलाते हैं, वो मुरली हमारे लिये बहुत अच्छा साधन है, बाबा ने कहा और हमने सारा दिन किया। हर मुरली में चारो ही सबजेक्ट्स होते हैं, उन चारो सबजेक्ट्स को ध्यान में रख करके हम उसी प्रमाण अपने आपको चलायें तो बहुत इज़ी है, मेहनत नहीं है क्योंकि बाबा से प्यार तो हम सभी का है।

तो आप सभी मधुबन में आकर मधुबन से क्या गिफ्ट ले जायेंगे? वो गिफ्ट शॉल, साड़ी, चादर वगैरह यह तो कॉमन बात है। लेकिन कौन-सी गिफ्ट ले जायेंगे? अपने दिल में बाबा को समा के जाना, जो दिल से निकले ही नहीं। दिलाराम है ना। दिल में आराम कराने वाला है इसलिए जो भी यहाँ से जायें तो एक बात ज़रूर करना, जो भी आपकी कमी हो तो यहाँ से लेके नहीं जाना लेकिन बाबा के आगे दे करके जाना, अपने को मुक्त करके जाना क्योंकि यहाँ मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन का संग, मधुबन में बाबा की मुरली आपको मदद करेगी। अगर कोई भी ऐसी बात मन में हो तो लेके नहीं जाना, खाली दिल करके जाना। साफ दिल में बाबा को बिठाके जाना और बाकी जो दिल में ऐसी वैसी बातें हो ना, वो यहाँ छोड़के जाना। छोड़ना आता है ना? तो जो कमी कमज़ोरी वहाँ नहीं जा सकी, कोशिश तो वहाँ भी करते होंगे लेकिन यहाँ बाबा की डायरेक्ट दृष्टि है, बाबा का निवास है इसलिए यहाँ दृढ़ संकल्प करेंगे, तो सहज हो जायेगा। सिर्फ संकल्प नहीं करना - हो जायेगा, करता तो हूँ...नहीं, करना ही है इसको कहा जाता है दृढ़। तो ऐसे दृढ़ करके जायेंगे तो आपको मधुबन का वायुमण्डल भी मदद देगा। यहाँ बगीचे और वृक्ष बहुत हैं, तो वृक्ष के नीचे अगर कुछ रह गया हो तो उसको छोड़के जाना, लेके नहीं जाना क्योंकि वैसे भी कहीं यात्रा पर या ऐसे शुभ कार्य के स्थान पर जाते हैं तो कुछ न कुछ छोड़के ही आते हैं। तो यह मधुबन तो बाबा का घर है, आपका भी घर है लेकिन यह घर ऐसा है जो सम्पन्न बना देता है। इसीलिए यहाँ वरदान मिलेगा, अगर आपने दिल से यहाँ कोई भी ऐसी बात छोड़ी, तो जब भी आप मधुबन याद करेंगे तो वो चीज़ छोड़ने में यह मदद करेगा, क्योंकि यहाँ बाबा का वायुमण्डल है, जो भी आते हैं सभी में शुभ भावना होती है इसलिए वह मदद आपको बहुत मदद करेगी, तो कुछ भी ऐसा लेके नहीं जाना, जो छोड़ने की चीज़ है वह यहाँ ही छोड़के जाना। अंश मात्र भी लेके नहीं जाना। बाबा को दे दी, मधुबन में छोड़के गये तो फिर वापस कैसे लेंगे? तो बाबा, जो मेरे बच्चे कहके बहुत महिमा करता है वही रूप यहाँ अनुभव करके वहाँ जाना। सहज है ना? जो भी गलती है या कोई संस्कार है, वह छोड़ना मुश्किल तो नहीं लगता? यहाँ बाबा की और ब्राह्मणों की मदद है, कितना वायुमण्डल शुभ है, कितना सब पुरुषार्थ में सफल हो रहे हैं। तो जो भी ऐसी बातें हों वो यहाँ छोड़के जाना।